



खड़गपुर कारखाना

दर्पण

संरक्षक

सीताराम सिंक्
मुख्य कार्य प्रबंधक

प्रधान संपादक

संजय त्यागी
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
उप मुख्य यांत्रिक
इंजीनियर(कारखाना)

संपादक

तारकेश्वर शर्मा

सहायक संपादक

वेद प्रकाश मिश्र

तकनीकी संपादक

उदय कुमार मिश्र
सीनियर इंजीनियर(आई. टी.)

पत्राचार हेतु पता

संपादक
खड़गपुर कारखाना दर्पण
राजभाषा अनुभाग,
मुख्य कार्य प्रबंधक कार्यालय,
खड़गपुर कारखाना
पोस्ट : खड़गपुर-721301



माइक्रो-प्रोसेसर आधारित कंट्रोल एवं त्रुटि-निर्धारण उपकरण

: शिव शंकर दास, सीनियर सेक्शन इंजीनियर
ई.आर.एस-पी.ओ.एच., खड़गपुर कारखाना

भारतीय रेल में विद्युत इंजनों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वाष्प चालित इंजन के बंद होने और डीजल इंजन की संख्या में कटौती होने के पश्चात् विद्युत इंजनों का उपयोग बहुत बढ़ गया है। आज देश भर में लगभग 4930 विद्युत लोको विभिन्न क्षेत्रीय रेलवे में कार्यरत हैं।

विद्युत इंजन के त्रुटिहीन चालन के लिए पारंपरिक लोको में विभिन्न प्रकार के विद्युतीय यांत्रिक और विद्युतीय वायवीय रिले और कान्टैक्टर्स लगाए गए हैं। रिले द्वारा संचालित लोको कंट्रोल के लिए बड़ी मात्रा में केबल और इन्टरलॉकिंग कॉन्टैक्ट की आवश्यकता होती है। भारी रख-रखाव और विश्वसनीयता की कमी के कारण वर्तमान पद्धति के बदले एक विश्वसनीय पद्धति की आवश्यकता महसूस की गई।

वर्तमान कार्यरत लोको में त्रुटि के दौरान वास्तविक दोष जानने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है, जिससे इसकी त्रुटि निर्धारण और डाउन-टाइम की कमी में मुश्किलें आती हैं। लोको में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की त्रुटियों का सही निर्धारण कर उसे तुरंत समाधान एवं लोको को पुनः कार्य करने लायक स्थिति में लाकर लोको की आइडियल समय में कमी करने के लिए "माइक्रो-प्रोसेसर" आधारित कंट्रोल एवं त्रुटि निर्धारण उपकरण का इस्तेमाल किया जा रहा है।

इस पद्धति में अलग-अलग तीन सब-रैकों की व्यवस्था एक ही मुख्य कैबिनेट के भीतर की गई है। इस पद्धति की प्रमुख इकाई माइक्रो-प्रोसेसर द्वारा संचालित है, जिसके फलस्वरूप कई रिले और उससे इन्टरलॉकिंग लॉजिक को लोको से हटाकर केबलों के कनेक्शन की जटिलता एवं उपकरणों की कमी कर मूल्य में कटौती की गई है।

मास्टर कक्ष(कैब-ए) और पृष्ठ भाग कक्ष(कैब-बी) में दोहरे डिस्प्ले के द्वारा त्वरित लोको के दोष का पता लगाया जा सकता है। डिस्प्ले यूनिट के की-बोर्ड में पाँच बटन दिए गए हैं। इन की-बोर्ड द्वारा लोको की वर्तमान स्थिति और सूचना का पता डिस्प्ले पर्दे पर की जाती है। इस उपकरण द्वारा पैंटोग्राफ, बैटरी चार्जर, उच्च विद्युतीय सर्किट ब्रेकर, सभी प्रकार के वायुप्रवाह मोटर, आर्नो कंप्रेसर, कर्षण मोटर, कॉन्ट्रैक्टर और सभी प्रकार के रिले की त्रुटियों के बारे में तुरंत पता लगाकर समाधान किया जा सकता है। लोको को आनलाइन रखने में इस उपकरण की देन अद्वितीय है।

ई.आर.एस.-पी.ओ.एच. शॉप ने माइक्रो-प्रोसेसर के निरीक्षण के लिए एक टेस्ट बेंच का निर्माण किया है। एम.एफ.डी.सी.एस. के ओवर हॉलिंग एवं लोको में लगाने के पूर्व इसी टेस्ट बेंच में परीक्षण किया जाता है, जिससे मरम्मत की गुणवत्ता की जाँच की जा सके। इस उपकरण द्वारा परीक्षण करने के फलस्वरूप लोको में माइक्रो-प्रोसेसर की त्रुटि में कमी आई है एवं लोको के सुचारु ढंग से चलाने में मदद मिली है।

खड़गपुर कारखाना में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 26 अगस्त से 30 अगस्त, 2014 तक खड़गपुर कारखाना के राजभाषा अनुभाग के प्रशिक्षण कक्ष में पाँच दिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। श्री तारकेश्वर शर्मा, श्री उपेन्द्र पासवान और श्री वेदप्रकाश मिश्र का इस आयोजन में महत् योगदान रहा है। आइआइटी खड़गपुर के हिन्दी अधिकारी श्री राजीव कुमार रावत ने कम्प्यूटर में हिन्दी में काम करने के लिए यूनिकोड सक्रिय करने की प्रक्रिया समझाई। श्री शर्मा ने विभिन्न कार्यालयों के टेम्पलेट और प्रायः उपयोग में आने वाले पत्रों के बारे में बताया तथा उन्हें द्विभाषी रूप में कम्प्यूटरीकृत रूप में एक साथ जारी कर प्रयोग में लाने पर बल दिया। उपसर्गों के कारण शब्दों के अर्थ में बदलाव की प्रक्रिया को समझाते हुए श्री वेदप्रकाश मिश्र ने राजभाषा में अनु, अनु, अभि, प्रति आदि जैसे उपसर्गों और उनके अर्थ की विशेषताओं के बारे में बताया।

दिनांक 30.08.2014 को कार्यशाला की समाप्ति के उपरांत श्री डी.बी.राव, वरिष्ठ सहायक लेखा सलाहकार, खड़गपुर कारखाना और डॉ० राजीव कुमार रावत ने कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया। श्री संजय त्यागी, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी, ने अपनी कक्षा के दौरान कारखाने के विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिवों एवं अन्य कर्मचारियों से हिन्दी में काम करने के लिए एक दूसरे से सूचनाएं साझा करने की बात कही। प्रमाण-पत्र श्री त्यागी के हस्ताक्षर से जारी किए गए।



खड़गपुर कारखाना के विभागीय राजभाषा सचिवों की बैठक

दिनांक 28 अगस्त, 2014 को खड़गपुर कारखाना के राजभाषा अनुभाग के प्रशिक्षण कक्ष में श्री संजय त्यागी, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी, के साथ विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिवों की बैठक संपन्न हुई।

ई-पत्रिका के लिए रिपोर्ट, आलेख एवं साहित्यिक रचनाओं के संग्रह के लिए सचिवों को निर्देश दिया गया।

कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करने तथा सीखने के लिए राजभाषा अनुभाग के संपर्क में रहने के लिए कहा गया।

मासिक प्रगति का समय पर प्रेषण भी एक महत्वपूर्ण विषय था।

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी ने सभी को तत्परता से एवं समन्वय के साथ काम करने की सलाह दी।



खड़गपुर कारखाना ने मनाया राजभाषा पखवाड़ा-2014

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी खड़गपुर कारखाने की ओर से राजभाषा पखवाड़ा-2014 का भव्य आयोजन दिनांक 13.09.2014 से 27.09.2014 तक किया गया। पखवाड़े के दौरान हर कार्य दिवस को एक और एक से अधिक कार्यक्रम संपन्न किए गए। सारे कार्यक्रम की रूपरेखा कारखाने के मुख्य कार्य प्रबंधक, श्री सीताराम सिंकु और उप मुख्य राजभाषा अधिकारी व उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर(उत्पादन), श्री संजय त्यागी द्वारा तैयार की गई थी।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग-प्रसार के उद्देश्य से दिनांक 14.09.2014 से 19.09.2014 तक राजभाषा अनुभाग के कर्मचारियों द्वारा कारखाने के समस्त विभागों के कार्यालयों/अनुभागों/शॉपों के कर्मचारियों को हिन्दी में सुचारु रूप से कामकाज करने के लिए टेबुल ट्रेनिंग दिया गया। साथ ही 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के अवसर पर कारखाने के मुख्य कार्य प्रबंधक के द्वारा जारी किए गए 'हिन्दी दिवस' पर संदेश सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए परिपत्रित किया गया तथा इसे पढ़ा गया।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान निर्धारित तारीख को हिन्दी क्विज, निबन्ध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, वाक् आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिसमें कारखाने के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने काफी संख्या में भाग लेकर न केवल उत्साह वर्द्धन किया बल्कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम् भूमिका निभाई।



दीप जलाते हुए श्री सीताराम सिंकु, मु.का.प्र. खड़गपुर कारखाना



दर्शक दीर्घा को सुशोभित करते श्री संजय त्यागी, श्री सीताराम सिंघु, डा.राजीव रावत, श्री कमलाकांत पाठक

अधिकारियों के लिए हिन्दी क्विज् प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 19 सितम्बर को अधिकारियों के लिए हिन्दी क्विज् प्रतियोगिता का आयोजन मुख्य कार्य प्रबंधक के सभाकक्ष में भव्य तरीके से किया गया, जिसमें कुल 14(चौदह) अधिकारियों ने भाग लिया। हिन्दी में पूछे गए प्रश्न प्रशासनिक शब्दावली(हिन्दी-अंग्रेजी और अंग्रेजी-हिन्दी), सामान्य ज्ञान और राजभाषा विषयक पर आधारित थे। इस क्विज् प्रतियोगिता के क्विज् मास्टर थे श्री के.पी.अधिकारी, उप मुख्य बिजली इंजीनियर(कारखाना)।

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों को हिन्दी-अंग्रेजी और अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश, हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकें, कलम आदि क्रमशः श्री ए.के.बेहेरा, मुख्य कारखाना इंजीनियर, दक्षिण पूर्व रेलवे, गार्डनरीच, कोलकाता, श्री सीताराम सिंकु, मुख्य कार्य प्रबंधक तथा श्री वाई.बी.सहारे, मुख्य कार्य प्रबंधक(मालडिब्बा), खड़गपुर कारखाना के कर कमलों से दिए गए।



दिनांक 19 सितम्बर को तृतीय श्रेणी के रेलकर्मियों के लिए हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 19 सितम्बर को राजभाषा अनुभाग, मुख्य कार्य प्रबंधक कार्यालय के प्रशिक्षण कक्ष में तृतीय श्रेणी के रेलकर्मियों के लिए हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 10(दस) कर्मचारियों ने भाग लिया। हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का विषय था - 'सबका साथ सबका विकास' अथवा 'भारत की सर्वधर्म समभाव परंपरा' पर 1000 शब्दों में एक घंटे के अंदर लिखना।

दिनांक 20 सितम्बर को तृतीय श्रेणी के रेलकर्मियों के लिए हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 20 सितम्बर को राजभाषा अनुभाग, मुख्य कार्य प्रबंधक कार्यालय के प्रशिक्षण कक्ष में तृतीय श्रेणी के रेलकर्मियों के लिए हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 11(ग्यारह) कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 23 सितम्बर को तृतीय श्रेणी के रेलकर्मियों के लिए हिन्दी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 23 सितम्बर को राजभाषा अनुभाग, मुख्य कार्य प्रबंधक कार्यालय के प्रशिक्षण कक्ष में तृतीय श्रेणी के रेलकर्मियों के लिए हिन्दी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 8(आठ) कर्मचारियों ने भाग लिया। हिन्दी वाक् प्रतियोगिता का विषय था - 'सामूहिक कृषि की आवश्यकता' अथवा 'पर्यावरण और औद्योगीकरण का समन्वय'। प्रतिभागियों को बोलने के लिए 5 मिनट दिया गया। निर्णायक मंडल में थे श्री ओम प्रकाश पाण्डेय, सहायक बिजली इंजीनियर(शक्ति) तथा श्री तारकेश्वर शर्मा थे।

दिनांक 23 सितम्बर को आयोजित शुद्ध वर्तनी लेखन प्रतियोगिता

दिनांक 23 सितम्बर को राजभाषा अनुभाग, मुख्य कार्य प्रबंधक कार्यालय के प्रशिक्षण कक्ष में रेलकर्मियों के बीच शुद्ध वर्तनी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को हिन्दी और अंग्रेजी के शब्दों को श्याम पट्ट (ब्लैक बोर्ड) पर चॉक से शुद्ध रूप में लिखना था और प्रश्नकर्त्ता श्री वेदप्रकाश मिश्र द्वारा वर्तनी संबंधी गलतियों पर सूक्ष्म नज़र रखते हुए सही-सही लिखने वाले को राजभाषा अनुभाग के सौजन्य से आकर्षक पुरस्कार दिया गया। यदि किसी प्रतिभागी द्वारा वर्तनी संबंधी भूल की गई तो तुरंत उसका शुद्ध रूप बताया गया।



दिनांक 24 सितम्बर को आयोजित की गई हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

दिनांक 24 सितम्बर को राजभाषा अनुभाग, मुख्य कार्य प्रबंधक कार्यालय के प्रशिक्षण कक्ष में तृतीय श्रेणी के रेलकर्मियों के बीच हिन्दी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भारी संख्या में प्रतिभागियों ने भाग लिया। चरणबद्ध तरीके से पाँच उत्कृष्ट पुरस्कार के लिए रेलकर्मियों को चुना गया। इस प्रतियोगिता में पहले 10 रेलकर्मियों को लिखित परीक्षा के आधार पर चयन किया गया और तदुपरांत क्विज प्रतियोगिता प्रारंभ की गई। हिन्दी में पूछे गए प्रश्न प्रशासनिक शब्दावली (हिन्दी-अंग्रेजी और अंग्रेजी-हिन्दी), सामान्य ज्ञान और राजभाषा विषय से संबंधित थे। इस क्विज प्रतियोगिता के क्विज मास्टर थे श्री तारकेश्वर शर्मा व श्री मनीष चंद्र झा।

इसके साथ ही निर्णायक मंडल में थे श्री डी.वी.राव, वरिष्ठ सहायक वित्त सलाहकार एवं श्री ओम प्रकाश पाण्डेय, सहायक बिजली इंजीनियर(शक्ति), जिनकी उपस्थिति में प्रतियोगिता स्थल पर ही कई प्रतिभागियों को राजभाषा अनुभाग के सौजन्य से कई आकर्षक पुरस्कार दिए गए।



राजभाषा प्रदर्शनी के चित्र





केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, खड़गपुर कारखाना की 101 वीं बैठक का आयोजन

दिनांक 25.09.2014 को केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, खड़गपुर कारखाना की 101 वीं बैठक श्री सीताराम सिंघु, मुख्य कार्य प्रबंधक, खड़गपुर कारखाना की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में श्री संजय त्यागी, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी व उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर(उत्पादन) ने केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में उपस्थित अध्यक्ष महोदय, सभी सदस्यों एवं विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिवों के साथ-साथ आमंत्रित सदस्यों का स्वागत किया। पिछली तिमाही में संपन्न बैठक के कार्यवृत्त की मदवार पुष्टि के साथ कार्यसूची पर चर्चा हुई। अध्यक्ष महोदय की अनुमति से निम्नलिखित निर्णय लिए गए :-

- (1) खड़गपुर कारखाने की ई-पत्रिका खड़गपुर कारखाना दर्पण का प्रकाशन यथाशीघ्र किया जाए।
- (2) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, खड़गपुर कारखाना के सचिवों को निर्देश दिया गया कि वे अपने कार्यालयों/अनुभागों/शॉपों में धारा 3(3) के कागजातों वाली फाइलों के ऊपर धारा 3(3) बड़े अक्षरों में लिखें।
- (3) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, खड़गपुर कारखाना के सचिवों को निर्देश दिया गया कि वे अपने कार्यालयों/अनुभागों/शॉपों में दैनंदिन कार्यों से जुड़े द्विभाषी रूप में तैयार टैम्पलेटों को वेबसाइट पर अपलोड कराएं।

- (4) भाषा प्रशिक्षण से संबंधित एक रजिस्टर कार्यालय में रखे जाएं।
- (5) किसी भी कार्यालय की ओर से जारी किए जाने वाले पत्रों के शीर्ष, विषय और हस्ताक्षरकर्त्ता का विवरण नियमानुसार हिन्दी और अंग्रेजी में अवश्य लिखे जाएं।
- (6) सभी विभागीय सचिव अपने विभाग के गार्ड फाइल को अपने शाखा अधिकारी को माह में एक बार अवश्य प्रस्तुत करें।
- (7) हर माह के अंतिम सप्ताह के मंगलवार को विभागीय सचिवों और राजभाषा अनुवादकों की बैठक राजभाषा अनुभाग में की जाएं।
- (8.) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में अनुवादकों को बुलाएं और सभी सचिव परस्पर एक दूसरे को भी बुलाएं। इससे एक दूसरे से सीखने की प्रेरणा मिलेगी।
- (9) कंप्यूटर एवं तकनीकी से संबंधित जानकारियों का उपयोग करें। यूनिकोड, गूगल इन पुट टुल्स, का उपयोग करते हुए हिन्दी में टाइप करें।
- (10) प्रत्येक मंगलवार को समस्त शाखा अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि अपने विभाग/ कार्यालय/ अनुभाग/ शॉप में ज्यादा से ज्यादा कार्य हिंदी में किए जाएं।

धन्यवाद ज्ञापन किया श्री वेदप्रकाश मिश्र ने।



खड़गपुर कारखाना में स्वच्छता अभियान

दिनांक 25 सितम्बर, 2014 को खड़गपुर कारखाना के सभी विभागों, सारी कर्मशालाओं में स्वच्छता अभियान चलाया गया। प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत की संकल्पना और रेलमंत्री के निर्देशों के अनुपालन के क्रम में आज कारखाने के सभी वरिष्ठ व कनिष्ठ अधिकारियों के साथ रेलकर्मियों ने स्वच्छता के इस अभियान में श्रमदान किया।

इस अवसर पर मुख्यालय, गार्डनरीच से पधारे मुख्य कारखाना इंजीनियर, श्री अनिल कुमार बेहेरा ने कहा कि स्वच्छता हमारा दैनिक आचरण का हिस्सा होना चाहिए और इस अभियान को हमें निरंतरता के साथ अपने जीवन से जोड़ लेना चाहिए।

श्री सीताराम सिंकु, मुख्य कार्य प्रबंधक, ने इस अवसर पर कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया और विभिन्न कार्यालयों का निरीक्षण किया। आपने कहा कि स्वच्छता का पहला अक्षर 'स्व' है और इसका अर्थ हमें खुद अपने कार्य स्थल और परिवेश की सफाई का ध्यान रखना चाहिए।

इस अवसर पर सभी अधिकारी यथा श्री संजय त्यागी, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी व उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर(उत्पादन), श्री अमित सिन्हा, उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर(सवारी डिब्बा) , मुख्य कार्य प्रबंधक के साथ स्वच्छता अभियान के श्रमदान एवं निरीक्षण में शामिल थे।





स्वच्छता अभियान की शपथ दिलाते मु.काप्र.(माडिका.) श्री वाय.बी.सहारे,और रेलकर्मों



मु.कारखाना इंजी. श्री ए.के.बेहेरा के साथ मु.का.प्र. श्री सीताराम सिंघु झाड़ू लगाते हुए,और ऊपर अपनी टीम के साथ तैयार श्री संजय त्यागी



कैरेज के पिट और स्क्रेप की सफाई के दौरान विमर्श की मुद्रा में अधिकारीगण

स्वच्छता अभियान पर आलेख

स्वच्छता ईश्वरत्व का दूसरा नाम है। ईश्वर को हम स्वच्छ कहते हैं-अपने आप से आच्छादित। निर्मलता स्वस्थ होने और आनन्दित रहने की पहली शर्त है।

दैनिक जीवन में हम घर से लेकर कार्यस्थल तक और इस बीच रास्तों में जीवन के कितने कार्य व्यापार और भागमभाग देखते हैं। जीवन के हर क्रिया कलाप में वांछित, अवांछित जरूरी गैर-जरूरी चीजें जुड़ी हैं। खाने-पीने के सामान से लेकर वस्त्र एवं आवास तक जो चीजें हमें चाहिए, उनकी मार्केटिंग, परिवहन, उपभोग के द्वारा दौरान कुछ न अवांछित निकलता रहता है। हो सकता है इस यात्रा में कभी वो जरूरी हो लेकिन एक अवस्था के बाद वह कूड़ा बन जाता है।

फुड पैकेजिंग, पानी की बोतलें, थर्मोकोल की प्लेट्स, प्लास्टिक के कप, छोटे-छोटे सामान ले जाने के लिए प्लास्टिक की थैलियाँ-ये सब नालियों में जाकर निकासी को अवरुद्ध करते हैं। प्लास्टिक का उपयोग बेतहाशा और अविवेकी ढंग से बढ़ गया है। इससे संबंधित कचरे के निपटान में तो और लापरवाही और मूढ़ता से लोग काम लेते हैं।

नालियों, घरों एवं अन्य स्थानों से निकलने वाले गंदे पानी के प्रवाह के लिए हैं। इनमें कूड़ा डालना, वो भी प्लास्टिक जैसे अविनश्य पदार्थ का-महामूर्खता है।

समाज में जीने के लिए हमें कुछ कायदा कानून मानना चाहिए। हमारी व्यक्तिगत स्वच्छता ही हमें सामाजिक व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करती है। यदि हम जहाँ-तहाँ पान, तम्बाकू, गुटखा खाते और थूकते रहें - सिगरेट का धुआं बिना किसी से क्षमा-याचना के उड़ाते रहे तो हमारा व्यक्तित्व छिछला हो जाएगा। हमारे कपड़े, दाँत, चेहरे की स्वच्छता, केशसज्जा हमारे व्यक्तित्व का परिचय दे देंगे।

अगर हम अस्वच्छता का प्रदूषण फैला रहे हैं, तो हम आत्म नियंत्रित व्यक्ति नहीं हैं। संयमी नहीं हैं। यह अस्वच्छता हमारे शरीर से ज्यादा मन को बीमार कर देगी।

अतः किसी के टोकने से पहले, स्व की चेतना पर हम परिवेश को साफ रखें, कचरे का ठीक से निपटारा करें और व्यक्तिगत सफाई पर भी ध्यान दें।

मैंने तुम्हें पुकारा

शंकर कुमार जे.ई.विद्युत चालक/खड़गपुर

जब-जब हारा था,
मौन मन मैंने तुम्हें पुकारा,
केवल तुम्हें पुकारा।
टूट रहे रिश्ते नातों में
किससे कोई माँगे,
अनचाहे ही टूट रहे जन,
मन के सारे धागे,
नए-नए सब लोग,
किसने किसको कहाँ निहारा ?
सन्नाटे में कभी-कभी बस,
आहट मिलती तेरी,
शायद समझ सको तुम,
अंतर्मन की पीड़ा मेरी।
और नहीं कुछ तुम्हें सुनाकर
अपना बोझ उतारा।

मन को बहुत-बहुत समझाते,
इतना जीवन बीता,
मिली नहीं पर छाँह बाँह की,
मन रीता का रीता,
मिलते चलते, रहा बहुत, पर
किसका कौन सहारा ?
उत्सव दिन बीते रीते,
गीत सभी फाल्गुन के,
एक-एक कर बिखर गए सब,
सपने अपने मन के,
मन के टेढ़े-मेढ़े अक्षर
किसने कहाँ सवारा ?
जब-जब हारा था,
मौन मन मैंने तुम्हें,
केवल तुम्हें पुकारा ।

सच्चरित्रता उन्नत और समृद्ध राष्ट्र का आधार होता है

: शंकर कुमार, जे.ई./विद्युत लोको चालक/खड़गपुर

नेपोलियन ने कहा था “आप मुझे अच्छी (चरित्रवान/सच्चरित्र) माँ दें मैं आपको एक अच्छा (उन्नत और समृद्ध) राष्ट्र दूँगा।” व्यक्ति के सच्चरित्र होने से परिवार उन्नत और समृद्ध होगा। परिवार के सच्चरित्र होने से समाज उन्नत और समृद्ध होगा। पूरे समाज के सच्चरित्र होने से राष्ट्र उन्नत और समृद्ध होगा। इसमें किसी प्रकार का संदेह ही नहीं है कि सच्चरित्रता राष्ट्र के लिए एक वरदान है। सच्चरित्र अपने कर्मों से इसी पृथ्वी को स्वर्ग में रूपांतरित कर देता है जबकि दुष्चरित्र अपने कुकर्मों एवं कुकृत्यों से इस पवित्र धाम को नरक बना देता है। सच्चरित्र के लिए हमेशा स्वर्ग के द्वार खुले रहते हैं। ऐसे ही मनुष्य को ध्यान में रखकर मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है-

“खलों को कहीं भी नहीं स्वर्ग है।

भलों के लिए तो यही स्वर्ग है।

सुनो स्वर्ग क्या है ? सदाचार है।

मनुष्यत्व की मुक्ति का द्वार है॥

नहीं स्वर्ग कोई धरावर्ग है,

जहाँ स्वर्ग का भाव है, वहाँ स्वर्ग है।

सदाचार ही गौरवागार है, मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है॥”

संसार में धन-बल, जन-बल, बुद्धि-बल, मनोबल, शरीर-बल और चरित्र-बल आदि बल के अनेक स्वरूप माने गए हैं। इन सभी का समय-समय पर अपना-अपना मूल्य और महत्त्व भी अवश्य माना गया है। संसार में भोजन, कपड़ा और मकान तथा अन्य आवश्यक जीवन योग्य वस्तुएं पाने के लिए कुछ न कुछ धन-बल का रहना भी आवश्यक है। एक गृहस्थ व्यक्ति के पास तो हर हाल में आवश्यकतानुसार धन-बल रहना ही चाहिए। जन-बल देश और राष्ट्र का अस्तित्व बनाए रखता है। बुद्धि-बल के अभाव में कोई भी उचित- अनुचित का ज्ञान नहीं रख सकता। मनोबल व्यक्ति की मानसिक दृढ़ता का प्रतीक तो होता ही है, कार्य करने की प्रेरणा भी मुख्य रूप से वही देता है। अपनी तथा अपनों

की रक्षा के लिए शरीर-बल यदि आवश्यक है, तो चरित्र बल अन्य सभी बलों, मानवीयता और सभी प्रकार के सद्गुणों की रक्षा करने के लिए आवश्यक है, क्योंकि कहा गया है- “धन-बल, जन-बल बुद्धि अपार। एक सदाचार बिना सब बेकार।।” इसी कारण तो अंग्रेज़ी में एक कहावत कहा गया है जिसका हिन्दी रूपांतरण इस प्रकार है-

“धन यदि गया, गया नहीं कुछ भी,
स्वास्थ्य गया, तो कुछ जाता है।
सदाचार यदि गया मनुष्य का,
सब कुछ ही लुट जाता है।”

अर्थात् खोया हुआ धन परिश्रम करके दुबारा कमाया जा सकता है। नष्ट स्वास्थ्य खेल कूद, सैर-सपाटा, व्यायाम, संतुलित आहार-विहार द्वारा पुनः प्राप्त हो सकती है। लेकिन खोया हुआ चरित्र कभी भी वापस नहीं पाया जा सकता है। व्यक्ति के चरित्र का भ्रष्ट होने से उसका मूल्य सारे खानदान को ही नहीं बल्कि आनेवाली पीढ़ियों को भी भुगतना पड़ता है। दुश्चरित्रता का कलंक एक बार माथे पर लग जाने पर फिर लाख उपाय करने पर भी उतारा नहीं जा सकता। उस पर तो कविवर सूरदास की यह पंक्ति ही चरितार्थ होती है: “सूरदास खल काली कामरि चढ़ै न दूजो रंग।” अर्थात् जिस प्रकार काले कम्बल पर कोई रंग नहीं चढ़ जाता, उसी प्रकार दुश्चरित्र पर सच्चरित्रता का रंग चढ़ पाना असंभव है। जीवन की कठिनाइयाँ सबको झेलनी होती हैं और सच्चरित्र व्यक्ति कठिनाइयों से तपकर कुंदन बनकर निखरता है। चरित्र व्यक्ति को ऊँचा उठाता है, चरित्रवान् की रक्षा करता है, उसका बल बढ़ाता है और विजय दिलाता है। रावण शक्तिशाली सम्राट था किन्तु दुश्चरित्र था क्योंकि उसने दूसरे की पत्नी (श्री राम की) सीता को जिसे नैतिकता से माँ के समान मानना है, उसका अपहरण किया था। श्री राम वनवासी थे किन्तु चरित्रवान थे अतः वे रावण का नाश (लंका का भी) करने में सक्षम हुए। चरित्र का ही बल था कि आज गौतम बुद्ध, महावीर, सुर, तुलसी, कबीर, रैदास, गुरुनानक और गुरुगोविन्द सिंह पूजनीय हैं और हम उनकी यशोगाथा गाते-गुनगुनाते हैं। अपनी सच्चरित्रता के कारण ही शिवाजी का नाम इतिहास में उसी तरह अमर है जैसे महान वीरता

और विजेता होने के कारण। एक बार उनका सेनापति नासिक पर आक्रमण कर विजेता बन वहाँ का धन-माल तो लूट ही लाया, वहाँ के नवाब की बेगम को भी अन्य कई सुंदरियों के साथ ले आया। पता चलने पर शिवाजी में अपने उस सेनापति को तो दंडित किया ही, सेना के लिए भविष्य में यह नियम भी बना दिया कि कभी कोई भूलकर भी बच्चों और महिलाओं को कुछ न कहेगा। फिर उस नवाब की सुंदरी बेगम के पैर छूकर शिवाजी ने कहा: “माता काश में भी आपका बेटा होता, तो कम से कम इतना कुरूप न होकर आप जैसा ही सुंदर होता। मैं तो बस, अपने सरदार द्वारा किए कार्य के लिए शर्मिन्दा हूँ, आप से क्षमा ही माँग सकता हूँ।” तत्काल शिवाजी ने नवाब की बेगम तथा अन्य महिलाओं को बहुत सारी भेंटें देकर वापस भिजवा दिया। इसे कहते हैं सच्चरित्रता का जीता-जागता उदाहरण। जबकि दुर्योधन और कंस का नाम सुनकर ही घृणा से भर उठते हैं। हमारे चरित्रवान पूर्वजों की वजह से ही हमारा देश ‘विश्व गुरु’ और ‘सोने की चिड़ियाँ’ कही जाती थी, जिसे लक्ष्य करके ही कवि ‘जगदीश चंद्र त्यागी’ ने लिखा है-

“उन्नत -स्मृद्ध होगा राष्ट्र तभी, जब सच्चरित्रता यहाँ पर होगी।

भोगेगा सुख-समृद्धि वही, जो पहले थी भोगी।।”

मनुष्य की मनुष्यता उसके चरित्र में निहित होती है। चरित्रहीन व्यक्ति को हमारे समाज में पशु भी कहा गया है। चरित्र या सच्चरित्रता के आधार बिन्दु हैं- सत्यवादिता, परिश्रमशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, समयनिष्ठा, स्वावलंबन आदि। विश्व में प्रसिद्धि पानेवाले जितने भी महापुरुष हुए उन्होंने सच्चरित्रता का ही पालन किया था। आधुनिक काल में मोरारजी देशाई, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, जयप्रकाश नारायण, जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं ने अपने सच्चरित्रता के कारण ही बड़े-बड़े आंदोलनों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। विशाल जन समूह उनके पीछे बाँध को तोड़कर जल के बहने जैसा चलता था और किसी के रोके नहीं रुकता। आज भी टी.एन. शेषण और किरण बेदी ने अपनी सच्चरित्रता के कारण अपनी एक अलग छवि का निर्माण किया है। उनके समक्ष शासन वर्ग पंगु जान पड़ता है। एक अकेले सुभाषचंद्र बोस

सच्चरित्रता के कारण ही आत्म विश्वास के बल पर 'आजाद हिन्द फौज' लेकर भारत आए थे और आजादी की लड़ाई लड़ी।

सच्चरित्रता का प्रभाव इतना व्यापक और असरदार होता है कि उसके सम्पर्क में आने पर दुश्चरित्र व्यक्ति भी सच्चरित्र बन जाता है। जैसे अंगुलीमाल डाकू महात्मा बुद्ध के सम्पर्क में आने पर, डाकू रत्नाकर सच्चरित्रता के सम्पर्क से महागुनि वाल्मीकि बने, श्रीकृष्ण के सम्पर्क सच्चरित्रता से अर्जुन का मोहभंग हुआ और जीजाबाई की सच्चरित्रता से शिवाजी 'छत्रपति' बने। दूसरी ओर दुश्चरित्र में पड़कर भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य, कर्ण, दुर्योधन आदि पतन की गर्त में गिरे। ज्ञानहीन पुरुष को 'भर्तृहरि' ने पूँछविहीन पशु की संज्ञा दी है। लेकिन ज्ञान से बढ़कर भी चरित्र है। क्योंकि मणि धारण करनेवाला साँप भी दुर्जन के जैसा होता है।

अंततः किसी भी राष्ट्र या समाज की उन्नति तभी होती है जब वहाँ के निवासियों ने सच्चरित्रता को अपनाया होता है। अतः राष्ट्र की उन्नति और समृद्धि का आधार सच्चरित्रता का आधार बिन्दु ही है। विश्व के जो देश उन्नति एवं समृद्धि के चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुके हैं उनकी उन्नति का समृद्धि का आधार जीवन में सच्चरित्रता उतारना है। उसका अनुमान हम जापान देश के विकास से लगा सकते हैं जिसका द्वितीय विश्व युद्ध में सर्वनाश हो गया था परंतु सच्चरित्रता के आधार पर इसने आशातीत प्रगति की है। वहाँ के लोगों की परिश्रमशीलता, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी तथा समयनिष्ठ होना ही वहाँ के विकास में सहयोगी साबित हुआ है। यदि हम अपने नैतिक पतन को होने से रोक लेंगे, दुश्चरित्र की जगह सच्चरित्र बनेंगे तब देश का पतन रुक जाएगा और हमारे देश की उन्नति की आधारशिला तैयार होगी। हमारे देश की एकता और अखण्डता की रक्षा होगी तथा हमारा देश पुनः सांस्कृतिक विश्व गुरु के पद पर आसीन होगा और हम फिर सोने की चिड़िया कहलाएँगे।

सूचना का अधिकार

12 अक्टूबर 2005 को सूचना का अधिकार कानून को लागू किया गया था। यह कानून 120 दिन पहले यानी 15 जून को बना था।

इसके द्वारा देश के सभी नागरिकों को सरकारी रिकार्ड और प्रपत्र में दर्ज सूचनाओं को देखने और उसे प्राप्त करने का अधिकार प्रदान किया गया है।

जम्मू एवं कश्मीर को छोड़कर भारत के सभी भागों में यह अधिनियम लागू है।

इस कानून को लागू करने वाला भारत दुनिया का 61 वाँ देश है। इसकी नींव सबसे पहले स्वीडेन में 1766 में रखी गई थी। इसके ठीक 200 साल बाद 1966 में अमरिकी कांग्रेस ने इसे कानूनी रूप दिया।

भारत की सर्वधर्म समभाव परंपरा

: मनीष चंद्र झा, वरिष्ठ लिपिक, डीजल कर्मशाला

भारत की सर्वधर्म समभाव परंपरा को जानने से पहले धर्म की परिभाषा जानना आवश्यक है। धर्म किसी एक या अधिक पारलौकिक शक्ति में विश्वास तथा इससे संबंधित रीति-रिवाज, परंपरा, पूजा पद्धति और दर्शन का समूह है। धर्म के अनेक शाब्दिक अर्थ हैं :- आस्था, उपासना, कर्तव्य, धारणा, पंथ, पद्धति, विश्वास, श्रद्धा, रिलीजन, प्रथा आदि। ज़िन्दगी हमें जो धारण करना है वही धर्म है। नैतिक मूल्यों का आचरण ही धर्म है। धर्म वह है जिसके आचरण से व्यक्ति अपने जीवन को चरितार्थ कर पाता है। धर्म वह अनुष्ठान है, जिससे चेतना का शुद्धिकरण होता है। यह मनुष्य में मानवीय गुणों के विकास की प्रभावना, सार्वभौम चेतना का सत्संकल्प है।

मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं :-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्म लक्षणम्॥

धृति(धैर्य), क्षमा(दूसरों की गलतियों को क्षमा करना, क्षमाशील होना), दम(अपनी वासनाओं को नियंत्रण में रखना), अस्तेय(चोरी न करना), शौच(अन्तरंग और बाह्य शुचिता), इन्द्रिय निग्रह(इन्द्रियों को वश में रखना),

धी(बुद्धिमता का प्रयोग), विद्या(अधिक से अधिक ज्ञान की पिपासा), सत्य(मन, वचन, और कर्म से सत्य का पालन) और अक्रोध(क्रोध न करना) ये दस धर्म के लक्षण हैं।

श्रूयता धर्म सर्वस्व श्रुत्वा चैव अनुवर्त्यताम्।

आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत्॥

धर्म सर्वस्व क्या है, सुनो और सुनकर उस पर चलो। जो व्यवहार अपने लिए प्रतिकूल हो, वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए- यह धर्म की कसौटी है।

हिन्दू धर्म वेदों पर आधारित है। इसमें अनेक देवी-देवताओं की आराधना होती है, लेकिन इन्हें एक ही देवता का विभिन्न रूप माना जाता है। विश्व के सबसे बड़े धर्मों में हिन्दू धर्म सबसे प्राचीन धर्म है, लेकिन इसके सबसे अधिक उपासक भारत में हैं और विश्व में सबसे अधिक हिन्दुओं का प्रतिशत नेपाल में है। हालांकि, हिन्दू धर्म में अनेक देवी-देवता हैं, पर असल में यह एकेश्वरवादी धर्म है। हिन्दी में इसे सनातन धर्म या वैदिक धर्म कहा जाता है। इण्डोनेशिया में इसका औपचारिक नाम 'हिन्दू आहम' है।

हिन्दू धर्म वास्तव में धर्म अथवा सम्प्रदाय नहीं है, अपितु जीवन जीने की कला है। 'हिन्सायाम दूयते या सा हिन्दू' अर्थात् जो मन-वचन-कर्म से हिन्सा न करे, वह हिन्दू है और जो अपने स्वार्थ तथा हितों के लिए दूसरों को कष्ट दे, वह हिंसा है।

भारतवर्ष को ऋषि-मुनियों ने 'हिन्दुस्थान' नाम दिया था, जिसका अपभ्रंश 'हिन्दुस्तान' है। बृहस्पति आगम के अनुसार -

हिमालायात् समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरम्।

तं देवनिर्मित देशं, हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।

अर्थात् हिमालय से लेकर इन्दु सरोवर(हिंद महासागर) तक देवनिर्मित देश हिन्दुस्थान है। वर्तमान में इसे भारत और इण्डिया के नाम से जाना जाता है।

कालांतर में भारत में अनेक विदेशी आक्रमणकारी आए और यहाँ की मिट्टी में रच-बस गए। यहाँ की संस्कृति और धर्म को अपना लिए। भारत ही एक ऐसा देश है, जहाँ धार्मिक सहिष्णुता को कानून और समाज से मान्यता

प्राप्त है। भारत के पूर्ण इतिहास में धर्म का यहाँ की संस्कृति में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत विश्व की चार प्रमुख धर्मों का जन्म स्थान रहा है- हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिक्ख धर्म।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या के 80% लोग हिन्दू धर्म का अनुसरण करते हैं। इस्लाम धर्म 13%, ईसाई धर्म 2.3% और सिक्ख धर्म 1.9% भारतीयों द्वारा अनुसरण किए जाते हैं।

मौर्यकाल में भारत में दो प्रकार के दार्शनिक विचार प्रचलित थे। श्रमण धर्म और वैदिक धर्म। दोनों ही धर्मों का अस्तित्व हजारों वर्षों का रहा है। जैन और बौद्ध धर्म श्रमण परंपराओं से निकलकर आए और आधुनिक हिन्दू धर्म वैदिक परंपराओं का ही विस्तार है।

पारसी और यहूदी धर्मों का भी भारत में प्राचीन काल से स्थान रहा है। अनेक भारतीय इसका अनुसरण करते हैं।

16 वीं शताब्दी से ही मुगल सम्राटों ने गंगा-जमुनी तहज़ीब पर बल दिया। सम्राट अकबर और हुमायूं इसमें प्रमुख हैं। अब्दुर रहीम खानखाना, मल्लिक मुहम्मद जायसी, रसखान आदि मुस्लिम कवियों ने हिन्दू देवी-देवताओं की शान में लोकप्रिय कसीदे गढ़ कर भारत में सर्वधर्म समभाव परम्परा की ज़मीनी हकीकत को तैयार किया।

सूफ़ी मुस्लिम संतों निजामुद्दीन औलिया, सलीम मोइउद्दीन चिश्ती आदि ने ईश्वर और व्यक्ति के प्रेम संबंधों पर बल दिया। हिन्दू संतों ने भी ईश्वर को पाने का उपाय प्रेम को बतलाया। इस प्रकार दोनों धर्मों में ईश्वर को पाने का उपाय प्रेम ही है। मुस्लिम सूफ़ी संतों की मज़ारों पर मुसलमानों के अलावा हिन्दू और अन्य धर्मों के लोग भी चादर चढ़ाने आते हैं और मन्नतें माँगते हैं। अजमेर शरीफ़ इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

सन् 1857 में घटित भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दू व मुसलमानों ने धर्म की भावना से उठकर अपनी आज़ादी के लिए अंग्रेज़ी साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध का बिगुल फूँका था। रानी लक्ष्मीबाई, बहादुरशाह ज़फ़र, तात्याटोपे, मंगल पाण्डे के पराक्रम ने अंग्रेज़ी साम्राज्य की नींव हिला दी थी।

इसके बाद अंग्रेजों ने भारत को धर्म और भाषा के आधार पर बाँटने का प्रयास किया, लेकिन भारतीयों ने राष्ट्रपिता महात्मागाँधी की अगुवाई में सर्वधर्म समभाव की परम्परा का पालन करते हुए अंग्रेजों को भारत से खदेड़ दिया।

अंग्रेजों ने जाते-जाते भारत को धर्म के आधार पर विभाजित कर मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान की स्थापना कर दी। इस बँटवारे में दोनों ही पक्षों के अनेक लोग मारे गए। यह एक प्रकार का धार्मिक उन्माद था। कभी-कभार इस प्रकार का धार्मिक उन्माद अब भी उपजता है, लेकिन सर्वधर्म समभाव की परम्परा होने के कारण यह कभी खतरनाक रूप से नहीं फैला।

बाबा भीमराव अम्बेडकर ने भारतीय संविधान का ढांचा तैयार किया। सन् 1976 में इसके प्रस्तावना में 'धर्म निरपेक्ष' शब्द जोड़ा गया जिसका अर्थ है कि भारत सरकार किसी एक धर्म का पालन 'धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार' हमें किसी एक धर्म को अबाध रूप से मानने, आचरण करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता देता है। इस प्रकार हमारा संविधान भी सभी धर्मों को समान भाव से देखने का कार्य करता है।

कुछ राजनीतिक दल वोट बैंक की राजनीति हेतु "धर्मनिरपेक्षता" की ग़लत व्याख्या कर किसी एक धर्म के लोगों को आरक्षण देने का प्रयास करते हैं, लेकिन भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने इसे गैर-संवैधानिक करार देकर सराहनीय कार्य किया है।

धर्मनिरपेक्षता का अर्थ किसी एक धर्म को आरक्षण देना नहीं, बल्कि सभी धर्मों के साथ समान भाव अपनाना है। यह हमारे लिए खुशी की बात कि हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी सर्वधर्म समभाव की परम्परा का पालन करने में विश्वास रखते हैं ना कि छद्म-निरपेक्षता की।

इंटरनेट, सोशल मीडिया भी सर्वधर्म समभाव के परम्परा के पालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। फेसबुक, व्हाट्सएप्लिकेशन, वाइबर, ट्विटर आदि द्वारा लोग एक दूसरे धर्मों के बारे में जानते हैं तथा अपने विचार साझा करते हैं।

भारत के हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख धर्मों के लोग एक दूसरे के पर्वों में शामिल होते हैं। इसे निम्न उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है :-

पश्चिम बंगाल में दुर्गापूजा बड़े भव्य तरीके से मनाया जाता है। दुर्गापूजा के भव्य पंडालों और दुर्गा प्रतिमा को देखने के लिए हिन्दू धर्मों के लोगों के अलावा अन्य धर्मों के लोग बड़ी संख्या में शामिल होते हैं। इसी तरह महाराष्ट्र में आयोजित गणेश पूजा में हिन्दू धर्मों के अलावा अन्य धर्मों के लोग भी शरीक होते हैं।

मुस्लिम पर्व ईद में हिन्दू भी गले मिलकर मुसलमानों के संग शरीक होते हैं।

क्रिसमस पर ईसाई धर्मों के लोगों के अलावा अन्य लोग भी चर्च जाकर उनके साथ क्रिसमस मनाते हैं और केक खाते हैं।

सिक्खों के धार्मिक स्थल स्वर्ण मंदिर में सिक्खों के अलावा अन्य धर्मों के लोग भी बड़ी संख्या में जाते हैं। वहाँ किसी प्रकार भेदभाव नहीं दिखाई पड़ता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत का प्रत्येक नागरिक अपने धर्म का पालन करता है। साथ ही साथ ये अन्य धर्मों का आदर भी करते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि भारत में प्राचीन काल से सर्वधर्म समभाव की परम्परा रही है और वर्तमान में भी कायम है। हमें इसे अक्षुण्ण बनाए रखने का संकल्प करना चाहिए, तभी भारत काश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से अरुणाचल प्रदेश तक सम्पूर्ण राष्ट्र के रूप संगठित रहेगा।

सबका साथ सबका विकास

: चन्द्रशेखर तिवारी, तकनीशियन ग्रेड-1, मालडिब्बा कर्मशाला

स्वतंत्रता के सात दशकों के पश्चात् भी हम देख रहे हैं, हमारे देश में एक विशाल जमसंख्या बुनियादी आवश्यकता के लिए तरस रही है, इसका मूल कारण है कि हमारे राजनेता और हमारी राजनीतिक व्यवस्था जिसने सबके विकास के विषय में सोचा ही नहीं, उनकी सोच सत्तालिप्सा और पाखंड दुष्चक्रों पर फँसी रही, येन-केन-प्रकारेण सत्ता हासिल करना ही उनका लक्ष्य बना रहा। देश हित और समग्र विकास की राजनीति हाशिए पर पड़ी रही है। समाज को बाँटने का गणित ही उनके राजनीति का आधार बना रहा है। परिणामस्वरूप, लोग इनकी ओछी राजनीति का शिकार हो पारस्परिक रूप से बाँटकर इनके स्वार्थपूर्ति का साधन बन गए। हमारा विकास आधा-अधूरा रहा, क्योंकि सब एक साथ एक विचारों के साथ सामूहिक विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हो पाये। जबकि हमने सपना देखा था कि एक गरिमामय आदर्श स्थिति स्थापित करेंगे और देश के विकास को प्राथमिकता देते हुए राजनैतिक संकीर्णतावाद का प्रदर्शन नहीं करेंगे।

आज देश को अपनी विकासगति बढ़ाने के लिए सबका साथ सबका विकास के भावना के साथ ईमानदार प्रयास की आवश्यकता है, जिसका दायित्व हमने अपने प्रतिनिधियों को दिया है। आज आज़ादी के इतने वर्षों के बाद भी हम अपनी सम्पूर्ण जनता को विकास का फल नहीं दे पाए, जो निश्चित रूप से इंगित करता है कि अभी तक सबका साथ सबका विकास वाली राजनीति नहीं हुई, बल्कि सत्ता की रणनीति बनाने में हमने सबका बँटाधार किया। हमें किसी भी संकीर्णतावाद में न पड़कर विकास के लिए सबको साथ लेने की जरूरत है। यदि हम अपने देश को विश्व के मानचित्र में एक मज़बूत ताकतवर प्रभावशाली देश के रूप में देखना चाहते हैं, तो हमें ओछी राजनीति त्यागनी पड़ेगी। वैसे भी अब ऐसी राजनीति के दिन लदने वाले हैं। स्वच्छ और आदर्श राजनीति के बल पर ही हम आगे बढ़ सकते हैं। हमें अपनी सोच और मानसिकता दोनों बदलकर सकारात्मक दिशा में चलना होगा।

2014 का लोकसभा चुनाव सबका साथ सबका विकास पर ही संपन्न हुआ, लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि ऐसी सकारात्मक और आशावादी विचारों पर भी हम एकपक्षीय राजनीति कर रहे हैं और ऐसी बातों का माखौल उड़ाकर इसे एक खास राजनीतिक दल से जोड़ देते हैं। क्या हम यह नहीं समझते कि हमारे शरीर का प्रत्येक अंग स्वस्थ और निरोग रहने पर ही पूर्ण स्वस्थ बना रह सकता है। शरीर का कोई अंग पीड़ा से भरा हो तो कराह उसी तरह पूरे शरीर से प्रकट होगी। ठीक इसी तरह हमारा विकास भी असंतुलित और एकपक्षीय हो, तो पूरी जनता सुखी कैसे रह सकती है ?

सम्पूर्ण हाथों का उपयोग कर ही हम सबके मुँह में निवाला डाल सकते हैं। इसके लिए हमें सबका साथ चाहिए और सबके विकास की बात संसद से लेकर सड़क तक उठानी चाहिए। इसे महज एक राजनीतिक नारा बनाकर हम अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने का आत्मघाती प्रयास न करें।

भूमंडलीकरण के इस दौर में जहाँ गलाकट प्रतियोगिता और संघर्ष का वातावरण बन रहा है, ऐसे में हम सम्पूर्ण देश को यदि एक साथ लेकर नहीं चलते हैं तो सोचना होगा कि हम किस दिशा में बढ़ रहे हैं। फलस्वरूप हमारी दशा क्या होगी ?

महात्मा गाँधी ने आखिर सम्पूर्ण समाज का सम्पूर्ण विकास के बारे में ही तो सोचा था ? लेकिन हम पस्त हो गए अपनी सत्तालोलुपता के समक्ष। धृतराष्ट्रवादी नायकों ने तिकड़मों का जालों को बिछाकर समाज में लकीर खींचकर पूरे देश को छलनी-छलनी कर डाला है। जाति, धर्म, पदवीसबका घालमेल कर चुनावी बिसात में जनता को तो लुटा ही, देश को भी खोखला बनाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ा। सबको सत्य जानते-समझते हुए भी चाटुकारिता के स्वभाव से पृथक होकर सबका साथ सबका विकास वाली प्रेरणादायक बातों को और असल तथ्य को सामने नहीं लाते। सामाजिक न्याय और तथाकथित पीड़ितों के नाम पर अपनी राजनीतिक रोटी सेंकने हेतु इतिहासों की कब्र खोदकर मनगढ़ंत कल्पनाओं की कहानी सुनाकर 'सबका साथ सबका विकास' वाली भावनाओं पर पलीता लगाना जब तक हम नहीं छोड़ेंगे तब तक सम्पूर्ण विकास की बात करना बेमानी होगा।

हमें पनी सारी योजना, सारा कार्यक्रम 'सबका साथ सबका विकास' वाली नीति पर ही चलाना होगा, वरना शरीर की भाँति किसी अंग का रोगग्रस्त होना पूरे शरीर के लिए पीड़ादायक होता है। हमें अपनी मानसिकता भी बदलनी होगी, वरना हम जहाँ से चले थे, वहीं आकर खड़े हो जाएंगे। 'सबका साथ सबका विकास' एक ऐसा मूलमंत्र है, जिसे रहने के साथ उस पर आचरण कर ही हम इस पर खरे उतर सकते हैं। सके लिए सकारात्मक राजनीति की ज़रूरत है। भारत का वैश्विक मान हम इसी नीति बढ़ा सकते हैं। मुझे आशा है कि हमारे राजनेता स विषय पर हर संभव योगदान देकर एक गरिमामय आदर्श स्थापित करेंगे और 'सबका साथ सबका विकास' को प्राथमिकता देते हुए राजनैतिक संकीर्णता का प्रदर्शन नहीं करेंगे। अब विश्व स्तर पर पना नाम करने के लिए और जीवन स्थिति सुधारने के लिए कमर कसनी होगी। हम सब भारत को आदर्श देश बनाने का संकल्प लें। ओछी राजनीति के दिन अब लदने चाहिए और स्वच्छ और आदर्श राजनीति स्थापित कर 'सबका साथ सबका विकास' के ही मूलमंत्र पर चलना होगा।

.....